ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

KEY WORDS:

''बदलते अन्तराष्ट्रीय परिवेश में अन्तराष्ट्रीय संगठनों की मानव कल्याण मे रचनात्मक भूमिका''

शिल्पा रानी

शोधार्थी,राजनीति विज्ञान, एस.के.डी. विश्वविद्यालय जिला – हनुमानगढ़ (राजस्थान)

ABSTRACT

विश्व परिदृश्य तेजी से बदल रहा हैं। अन्तराष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से 20वीं शताब्दी परिवर्तन की शताब्दी थी और इस शताब्दी में तीन बार ऐसे तूफान आए जिससे अन्तराष्ट्रीय राजनीति व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त हुआ। पहली बार प्रथम विश्वयुद्व की समाप्ति के बाद (1919 के बाद) दूसरी बार द्वितीय विश्वयुद्व के बाद (1945 के बाद) तीसरी बार सोवियत संघ के विघटन के बाद (1991 के बाद) विश्व परिदृश्य मे बुनियादी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे।वर्तमान विश्व में प्रत्येक राष्ट्र प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है इस प्रतिस्पर्धा के दौर में वैज्ञानिक अविष्कारों ने यातायात, संचार, विचार, वाहन, संवाद, वाद, प्रतिवाद, आवागमन और भ्रमण के लिए इतने शीघ्र त्वरित और समयसेवी साधन उपलब्ध करा दिए है मानो विश्व एक हो गया है। इसके साथ सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई। आज सम्पूर्ण मानवता आतंकवाद से त्रस्त है संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ–साथ विश्व व्यापार संगठन भी अप्रासंगिक होने लगा है। यह एक विचित्र बात है कि मानव समाज के आचरण में युद्व एवं शान्ति, विध्वंस तथा निर्माण के बीज साथ–साथ निहित है। विश्व के विभिन्न अन्तराष्ट्रीय संगठनों में संयुक्त राष्ट्र संघ संगठन और सार्क संगठन मान कल्याण की इसी कल्पना के साकार रूप है। इसलिए ऐसे वातावरण मे 'अन्तराष्ट्रीय संगठन विषयक जानकारी विश्वविद्यालयों के अध्ययनरत छात्रों के अलावा जन–साधारण के लिए भी आवश्यक है, संयुक्त राष्ट्र संघ ने पिछले 61 वर्षो से अपना कार्य सुचारू रूप से किया है तथा अन्तराष्ट्रीय विश्व को तृतीय विश्व युद्व की विभीषिका से बचाये रखा है। इस प्रतिस्पर्धा के युग मे इन संगठनों के माध्यम से ही विश्व शांति को तलाशा जा सकता है यही इन अन्तराष्ट्रीय संगठनों की पुरजोर मांग है। अतः उपरोक्त परिवेश में इस प्रस्तावित शोध योजना का लक्ष्य इन तत्वों का अध्ययन करना है जिसके फलस्वरूप अन्तराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगठनों की अन्तराष्ट्रीय विश्व शान्ति बनी रहे।

प्रस्तावना –

बीसवीं शताब्दी कई कारणों के आधार पर मानव इतिहास मे अत्यन्त अहम मानी जाती है क्योंकि इस शताब्दी ने मानव जीवन को कई तरह से प्रभावित किया सम्पूर्ण विश्व दो विश्व युद्धों की आग मे जला और नाभिकीय शस्त्रों के इस्तेमाल ने सम्पूर्ण मानव जाति के समक्ष यह प्रश्न खड़ा कर दिया कि यदि ऐसा ही होता रहा अर्थात् यदि विश्व के यह देश इस प्रकार युद्ध में संलग्न रहे तो वह दिन दूर नही जब सम्पूर्ण मानव जाति समूल नष्ट हो जाएगी।

वर्तमान युग में आज विश्व के 70–80 देशों के पास विध्वंसक हथियार विद्यमान है ऐसी परिस्थितियों मे यदि अन्तराष्ट्रीय संगठन अपना कार्य कुशलतापूर्वक न करे तो परिस्थितियां विकट हो जायेगी।

इस शोध प्रबन्ध की आवश्यकता इसलिए महसूस की गई क्योंकि आज अन्तराष्ट्रीय विश्व ऐसे अंधे मोड़ पर खड़ा है जब राष्ट्रों के सामने विभिन्न समस्याएं विद्यमान है इस प्रतिस्पर्धा के युग मे इन संगठनों के माध्यम से ही विश्वशान्ति को तलाशा जा सकता है। यही इन अन्तराष्ट्रीय संगठनों से समय की पुरजोर मांग है।

अन्तराष्ट्रीय संगठन

अन्तराष्ट्रीय संगठन उन संस्थाओं को कहते है जिसके सदस्य, कार्यक्षेत्र तथा उपस्थिति वैश्विक स्तर पर हो।

(1) अन्तराष्ट्रीय अशासकीय संगठन

(2) अन्तर्शासकीय संगठन।

इस प्रकार भय से बचने के लिए मानव कल्याण और विश्वशान्ति की आवश्यकता के फलस्वरूप विश्व मे कई अन्तराष्ट्रीय संगठनों की स्थापना हुई।

अन्तराष्ट्रीय संगठन विश्व कोश

(1) UNO– संयुक्त राष्ट्र संघ

(2) SAARC– एशियाई क्षेत्रीय सहयोग (सार्क) के संगठन

संगठनों की मानव कल्याण मे रचनात्मक भूमिका –

संगठन कार्य साधनों व संस्थाओं की एक औपचारिक अवस्था संगठन के बिना मानव जीवन की कोई भी क्रिया व्यवस्थित रूप से नहीं चल सकती है। अन्तराष्ट्रीय राजनीति का एक अन्य कारक अन्तराष्ट्रीय संगठनों का अध्ययन भी है।

मानव की सामाजिकता की भावना –

मानव एक सामाजिक प्राणी है सहयोग, एकता, सद्भाव, पारम्परिक आदान–प्रदान सामजस्य और सहिष्णुता उसके मूलभूत लक्षण माने जाते है। मानव की यह भावना ही संगठन में रहने के लिए प्रेरित करती है। इस सामाजिकता की भावना ने ही अन्तराष्ट्रीय संगठनों के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

साहित्य का अवलोकन –

(1) घई. यू. आर. – अन्तराष्ट्रीय राजनीति

(2) शर्मा प्रभुदत्त – अन्तराष्ट्रीय संगठन

(3) फडिया.बी.एल. – अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवना आगरा

(4) डॉ. रूमकी बसु – संयुक्त राष्ट्र संघ जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

(5) जोशी.आर.पी. – अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

(6) पीटरसन.एम.जे. – दी जनरल असेम्बली इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स

अन्तराष्ट्रीय संगठनों के उद्देश्य –

सुरक्षा और समृद्धि मानव की मुख्य आवश्यकता है इन्हें प्राप्त करने के लिए वह अन्तराष्ट्रीय शान्ति और सहयोग चाहता है अतः अन्तराष्ट्रीय संगठन के विकास क्रम के पीछे दो मुख्य लक्ष्य युद्ध पर प्रतिबंध और मानव की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करना है।

1. युद्ध की रोकथाम अथवा शान्ति एवं सुरक्षा कायम रखना।
2. उन विभिन्न समस्याओं का निदान करना, जो राज्यों के समक्ष उनके विदेशिक सम्बन्धों के संदर्भ में उपस्थित होती है।

अन्तराष्ट्रीय संगठन के उद्देश्य लगभग असीम है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य –

1. सामूहिक व्यवस्था द्वारा अन्तराष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा कायम रखना और आक्रामक प्रवृतियों को नियंन्त्रण में रखना।
2. अन्तराष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान करना।
3. राष्ट्रों के आत्मनिर्णय और उपनिवेषवाद विघटन की प्रक्रिया को गति देना।
4. सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय क्षेत्रों में अन्तराष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित एवं पुष्ट करना।

सार्क संगठन के उद्देश्य –

1. दक्षिण एशिया क्षेत्र की जनता के कल्याण एवं उनके जीवन स्तर में सुधार करना।
2. दक्षिण एशिया के देशों की सामूहिक आत्मनिर्भरता में वृद्वि करना।
3. क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास में तेजी लाना।
4. आपसी विश्वास, सूझ बूझ तथा एक दूसरे की समस्याओं का मूल्यांकन करना।
5. सामान्य हित के मामलों पर अन्तराष्ट्रीय मंचों पर आपसी सहयोग मजबूत करना।

अनुसंधान क्रिया विधि/शोध प्रविधि –

इस शोध ग्रन्थ मे ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्वति का प्रयोग किया जायेगा इस योजना के अनुसार इन अन्तराष्ट्रीय संगठनों की विश्व शान्ति मे भूमिका का ऐतिहासिक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन की योजना है। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ UNO एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) जैसे अन्तराष्ट्रीय संगठनों की कार्यशैली को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे जांचने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की पद्वति में पुस्तकों में, लेखों में, समाचार पत्र पत्रिकाओं में छपी सूचनाओं को आधार बनाया गया इस सीमा के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन का औचित्य –

अन्तराष्ट्रीय संगठनों के मंचों के माध्यम से परस्पर राष्ट्रों को वह मंच मिलते है जिन मंचों के माध्यम से वे अपने वैमनस्य को उगलते है। उसके पश्चात् राष्ट्रों के माध्यम से उनमे सहयोग व सन्धि के माध्यम से तनावों को समाप्त किया जाता है। यही छोटे–छोटे राष्ट्र क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से ऐसा करते है कि पारस्परिक तनाव को समाप्त कर इन राष्ट्रों मे परस्पर सहयोग व सामंजस्य उत्पन्न किया जा सके।

शोध की परिकल्पना –

अन्तराष्ट्रीय संगठन का अध्ययन राजनीति विज्ञान मे अपेक्षाकृत नया है। बीसवीं शताब्दी मे अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास का एक प्रमुख क्षेत्र अन्तराष्ट्रीय संगठनों की वृद्वि रहा है मानव इतिहास मे पहली बार सार्वभौमिक प्रकार से स्थाई संगठन का उदय हो पाया है।

इन संगठनों का अस्तित्व इसलिए है कि हम एक ऐसे अन्योन्याश्रित विश्व मे रहते है जिसमे मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति तब तक सम्भव नहीं जब तक उसके जीवन के कुछ निश्चित पहलुओं को अन्तराष्ट्रीय आधार पर संगठित न किया जाये।

सुझाव –

संयुक्त राष्ट्र संघ एवं सार्क संगठन से विश्व शान्ति हेतु सुझाव

बदलते अन्तराष्ट्रीय परिवेश में वर्तमान में अन्तराष्ट्रीय रंगमंच मे अनेक समस्याएं विद्यमान है। इन संगठनों के माध्यम से इन समस्याओं से विश्व को मुक्त करने हेतु सुझावः

1. रासायनिक तथा जैविक हथियारों पर रोक लगायी जानी चाहिए।
2. विश्व मे हो रहे संघर्षो एवं विवादों का समाधान।
3. शान्ति व सुरक्षा को बनाए रखना।
4. लोकतंत्र को प्रोत्साहन एवं कानून व्यवस्था सशक्त करना।
5. विश्व मे महिलाओं के प्रति भेदभाव तथा हिंसा को रोकना।
6. विश्व मे हो रहे संघर्षो एवं विवादों का समाधान करना।

7. नशीली दवाईयों की विश्वव्यापी समस्या से निपटने हेतु प्रयास करना।

निश्कर्श –

अन्तराष्ट्रीय संगठनों मे सहयोग होगा तो विश्व सभी समस्याओं का समाधान करने मे सफल होगा और तभी तो अन्तराष्ट्रीय रंगमंच को मजबुत किया जा सकता है अन्तराष्ट्रीय संगठनों को चाहिए कि वे नव विकसित छोटे राष्ट्रों के हितों की रक्षा करे और उनको हर क्षेत्र में प्रोत्साहन दे। शिक्षा, व्यापार, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र मे उनकी रक्षा करे अगर कोई बड़ा राष्ट्र छोटे राष्ट्रों पर दवाब डालता है और उनके हितों पर आघात पहुंचाता है तो इस क्षेत्र में भी संगठनों को सकारात्मक भूमिका का परिचय देना होगा अन्यथा विश्व अनेक समस्याओं के कारण संकट में पड़ जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पीटरसन, एम.जे.– दी जनरल असेम्बली इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स
2. रिखये इन्द्रजीत– दी थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ पीस कीपिंग
3. यूनाइटेड नेशन्स– दी इन्टरनेशनल बिल ऑफ ह्यूमनराइट्स
4. यूनाइटेड नेशन्स– ईयर बुक ऑफ दी यूनाइटेड नेशन्स
5. यूनाइटेड नेशन्स– पीस कीपिंग
6. राइट ओ– दी मैन्डेट अंडर दी लीग ऑफ नेशन्स
7. घई यू.आर.– अन्तराष्ट्रीय राजनीति
8. शर्मा, प्रभुदत्त– अन्तराष्ट्रीय संगठन, कॉलेज बुक डिपो जयपुर
9. फडिया, बी.एल.– अन्तराष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन आगरा
10. जोशी, आर.पी.– अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध, कॉलेज बुक डिपो जयपुर